# बुकर टी. वाशिंगटन

जैन

# बुकर टी. वाशिंगटन

जैन

1856 में वर्जिनिया, अमेरिका में वसंत का मौसम था. तब एक बड़े फार्म पर – जिन्हें प्लांटेशन कहते हैं एक लड़के का जन्म हुआ. उस लड़के के माँ-बाप, प्लांटेशन मालिक के गुलाम थे. इसलिए वो छोटा लड़का भी गुलाम पैदा हुआ था. उसका नाम था बुकर.

बुकर अपनी माँ और छोटे भाई जॉन के साथ एक कमरे की कुटिया में रहता था. घर का फर्श मिट्टी का था और खिड़कियों में पल्ले नहीं थे. बाद में वहीं बुकर की छोटी बहन अमांडा का जन्म हुआ.

अक्सर उन्हें दिन में सुबह एक बार ही खाने को मिलता था. बुकर, उबला हुआ मक्का खाता था, जो फार्म के जानवरों को खिलाया जाता था. उसके पास केवल एक ही कमीज़ थी जो चुभने वाले टाट से सिली गई थी. बड़े होने पर वो कमीज़ उसके लिए छोटी हो गई और उसे एक दूसरी कमीज़ मिली. पर उसके पास हमेशा सिर्फ एक ही कमीज़ होती थी.

नई कमीज़ क्योंकि खुरदुरी होती थी इसलिए बुकर को उससे नफरत थी. उसे पहनने से उसके पूरे बदन में खुजली होती थी. बुकर खुशनसीब था, क्योंकि उसका भाई बहुत दयालु था. भाई कुछ दिनों के लिए बुकर की नई कमीज पहनता था. उससे भाई की खाल छिल जाती थी, पर कमीज़ ज़रूर कुछ मुलायम पड़ जाती थी.
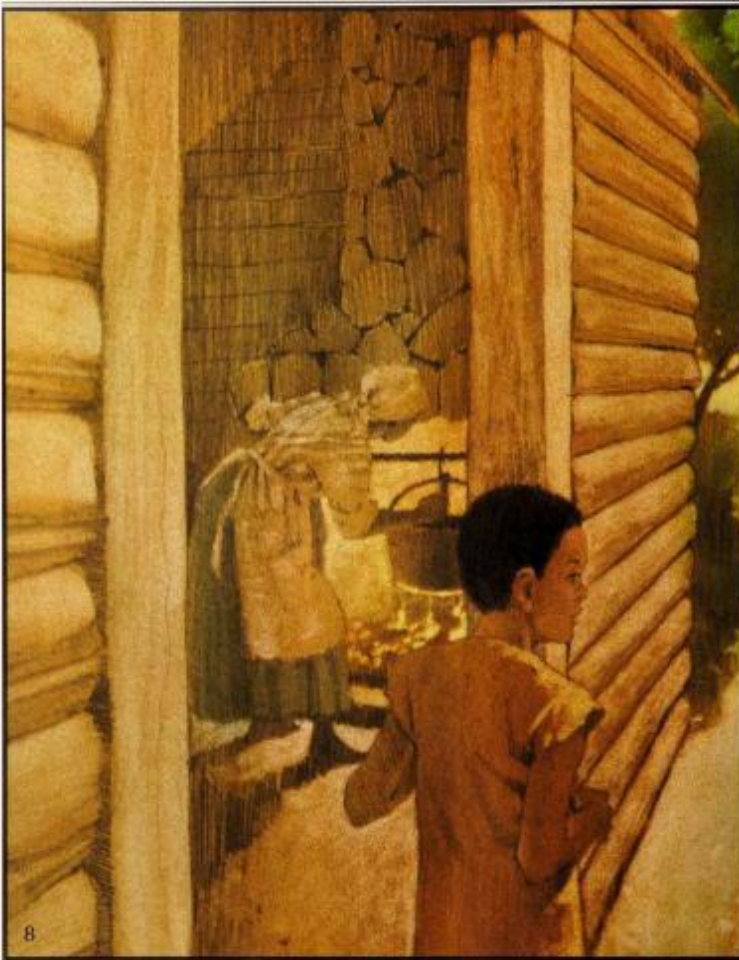
सभी गुलामों को फार्म पर कुछ-न-कुछ काम करना पड़ता था. बुकर की माँ फार्म के मालिकों के घर में खाना पकाने का काम करती थीं. मालिक लोग पास में ही एक बड़े घर में रहते थे. वो मालिकों का खाना अपनी ही कुटिया में एक बड़े चूल्हे पर पकाती थीं. इसलिए बुकर की कुटिया जाड़ों में गर्म रहती थी, पर गर्मियों में वो बहुत गर्म हो जाती थी.

कभी-कभी बुकर की माँ मुर्गी पकाने एक बाद उसका कुछ हिस्सा अपने परिवार को भी दे देती थीं. पर अक्सर बुकर को एक आलू या फिर एक कप दूध पीने को ही मिलता था.

छोटे बुकर को फार्म पर कई अलग-अलग काम करने पड़ते थे. वो खेतों में मजदूरों के लिए पीने का पानी लेकर जाता था. हरेक हफ्ते वो मक्का पिसवाने के लिए उसे चक्की पर लेकर जाता था. इसके लिए उसे घने जंगल में से होकर गुज़ारना पड़ता था और वो अँधेरा होने के बाद ही घर लौट पाता था.

मालिकों की लड़कियां स्कूल में पढ़ने जाती थीं. छोटा बुकर उनके बस्ते स्कूल तक उठाकर लेकर जाता था. पर उसे स्कूल के अन्दर घुसने की इज़ाज़त नहीं थी.
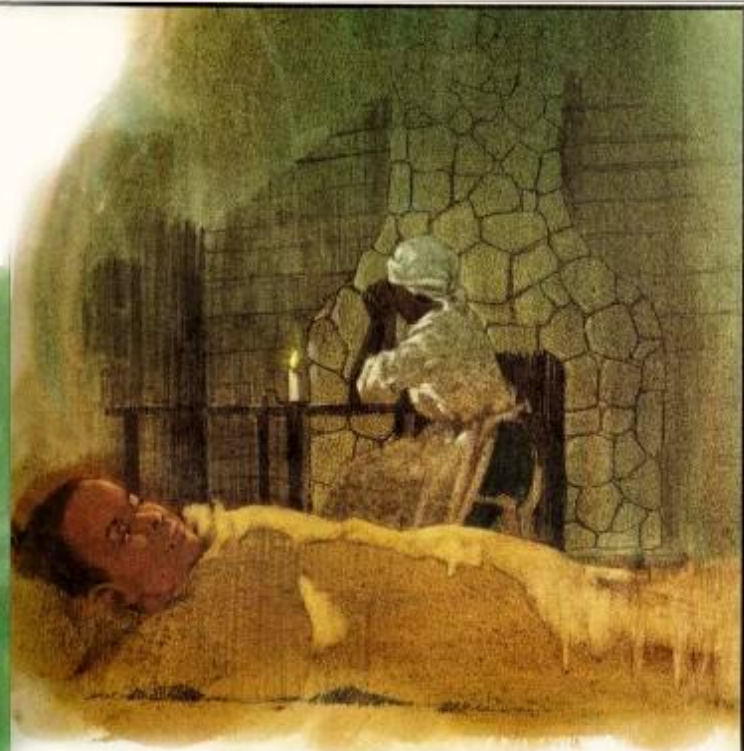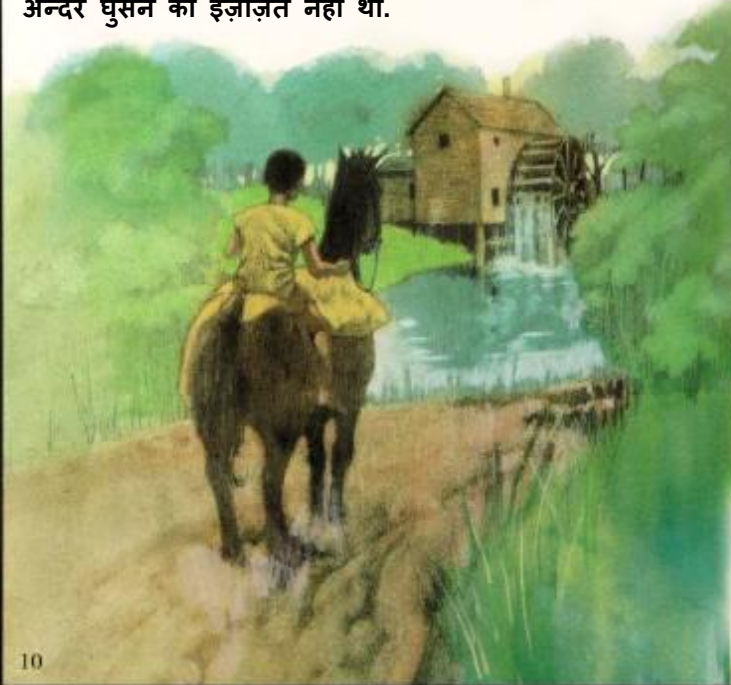
1865 में जब बुकर नौ साल का हुआ तब अमरीका में गुलामों को मुक्त कर दिया गया था. आगे क्या होगा यह बुकर को भी पता नहीं था. उसने रात में माँ को प्रार्थना करते हुए देखा था. माँ हमेशा गुलामी से मुक्ति चाहती थीं.
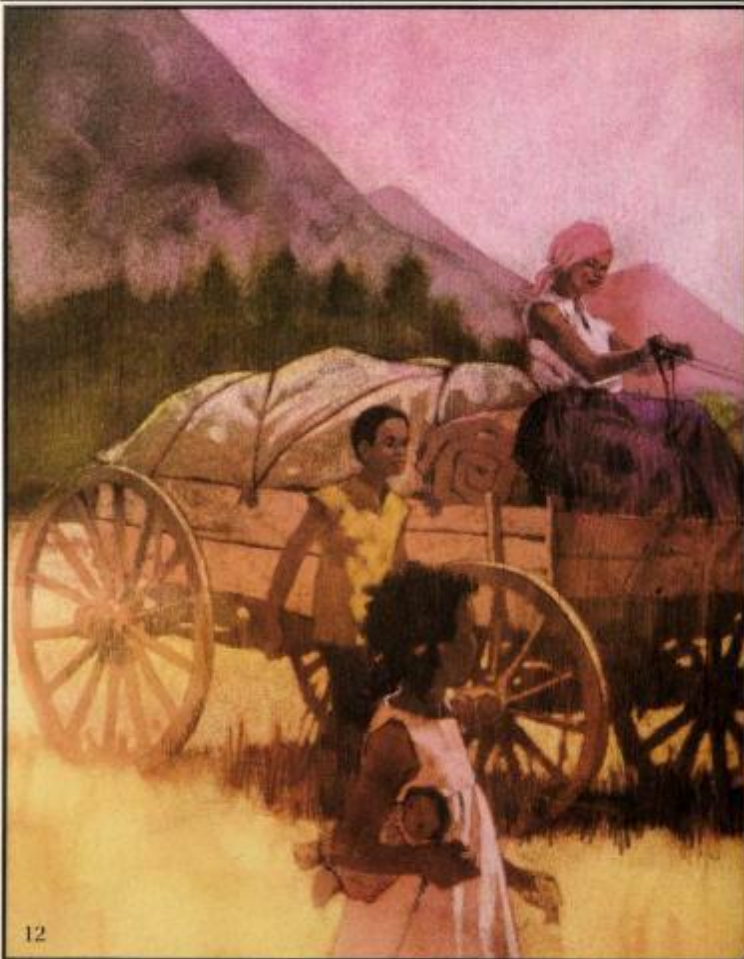
पहले बुकर की माँ ने एक गुलाम से शादी की थी. वो आदमी पास के ही एक फार्म में काम करता था. बाद में वो आदमी पश्चिमी वर्जिनिया चला गया. कुछ समय बाद उसने अपने परिवार को लाने के लिए एक गाड़ी और खच्चर भेजे.

पश्चिमी वर्जिनिया की यात्रा में उन्हें दो हफ्ते लगे. गाड़ी में बहुत ज़रूरी सामन ही भरा गया. इसलिए बच्चों को गाड़ी के पीछे-पीछे चलकर पहाड़ को पार करना पड़ा. अंत में वे मॉलदिन, पश्चिमी वर्जिनिया पहुंचे. वहां उनका घर कोई ख़ास अच्छा नहीं था. शायद वो पहले वाले घर से भी बदतर था.
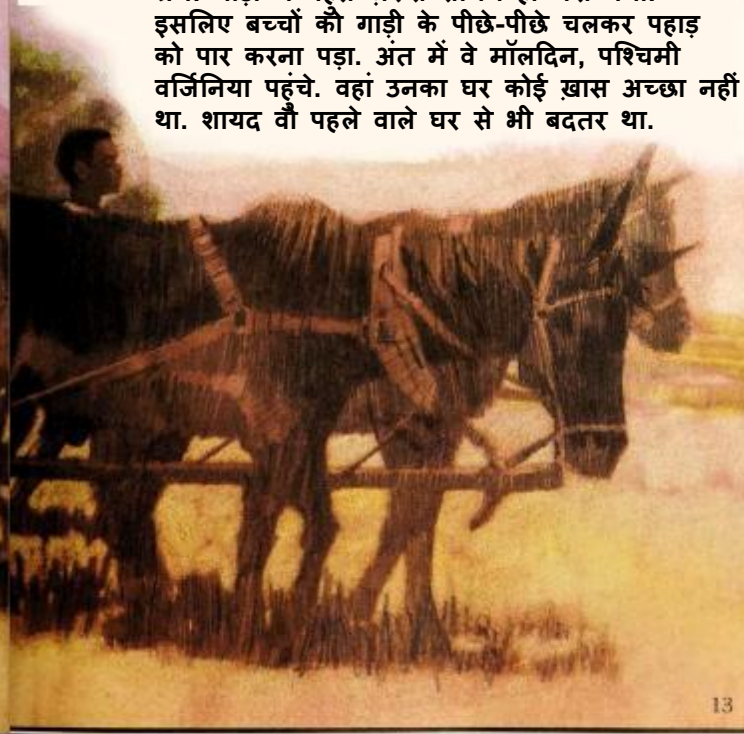
बुकर के सौतेले पिता एक नमक की खदान में काम करते थे. वो नमक को बड़े-बड़े लकड़ी के ड्रम में भरने का काम करते थे. इसलिए बुकर और उसके भाई जॉन को भी वहां नौकरी मिल गई.
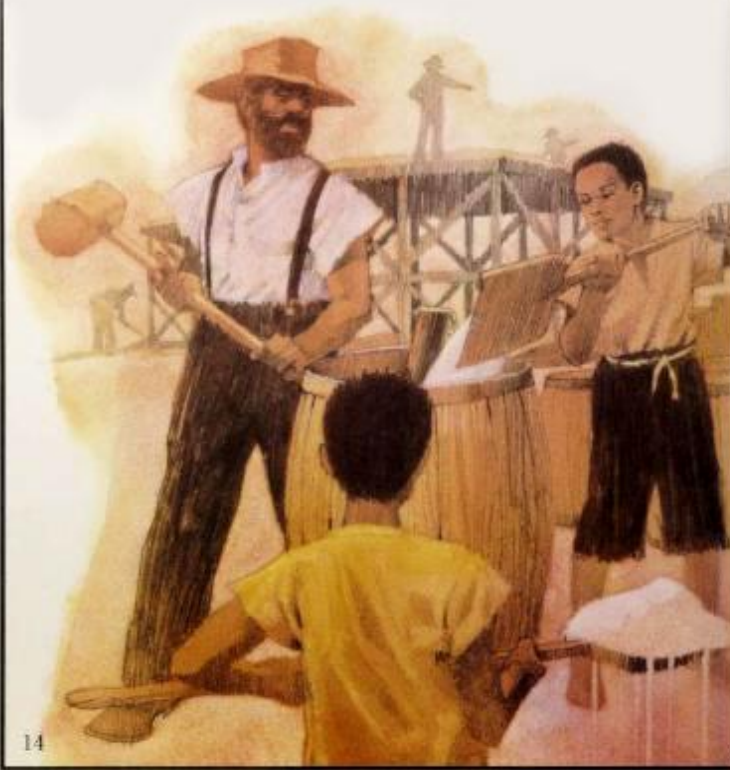
एक दिन बुकर ने बहुत से लोगों को एक युवक के आसपास खड़े हुए देखा. वो युवक लोगों को अखबार पढ़कर सुना रहा था. मजदूरों को खुद पढ़ना नहीं आता था. वे बड़े ध्यान से समाचार सुन रहे थे. तब पहली बार बुकर को समझ में आया कि अगर लोग पढ़ना सीखेंगे तो उससे उनका सोच भी बदलेगा. उसके बाद बुकर ने अपना मन पक्का किया. उसने पहले खुद पढ़ना सीखने का निश्चय किया! जितना भी संभव होगा, वो ज़रूर सीखेगा.

बुकर की माँ इस मुहिम में अपने बेटे की मदद करना चाहती थीं. उन्होंने अपने बेटे के लिए एक किताब खरीदी जिसका नाम था "वेबस्टर ब्लू बैक स्पेलर." बुकर ने उससे अक्षर सीखे. उसने सबसे पहले 18 का अंक सीखा – क्योंकि वो नंबर नमक की खदान के हरेक ड्रम पर लिखा होता था.

बुकर इसके अलावा और बहुत कुछ सीखना चाहता था. उसके घर के पास में ही एक टीचर ने एक नया स्कूल शुरू किया. बुकर उस स्कूल में जाना चाहता था. अंत में बुकर के सौतेले पिता ने उसे स्कूल जाने की इजाज़त दी. अब बुकर को स्कूल से पहले पांच घंटे और स्कूल छूटने के बाद दो घंटे काम करना पड़ता था. इसी शर्त पर उसके सौतेले पिता ने उसे स्कूल जाने की इजाज़त दी थी.
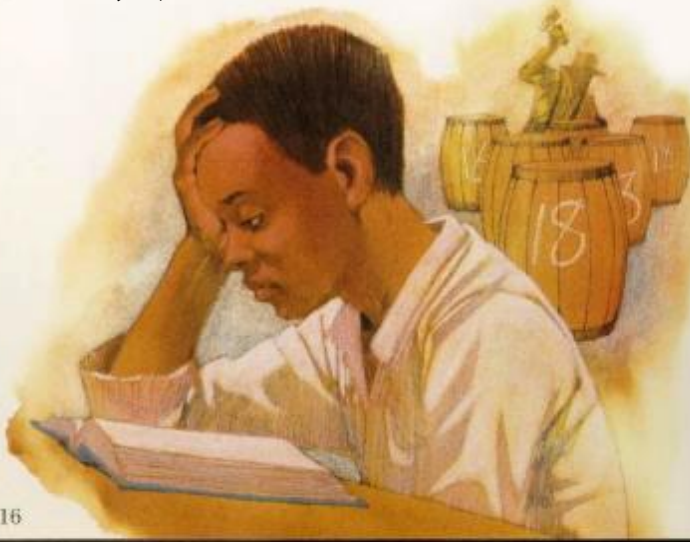
स्कूल में टीचर ने सभी बच्चों से उनके नाम पूछे. बुकर ने देखा की बाकी बच्चों के दो शब्दों के नाम थे. इसलिए जब उसकी बारी आई तो उसने उत्तर दिया, "बुकर वाशिंगटन!" बहुत साल बाद उसे पता चला कि उसका अंतिम नाम "टालियाफेरो" था. इसलिए उसने उसे अपने नाम के मध्य में लगाया. फिर उसे बुकर टी. वाशिंगटन के नाम से बुलाया जाने लगा. वो अब लिखना-पढ़ना सीख चुका था.
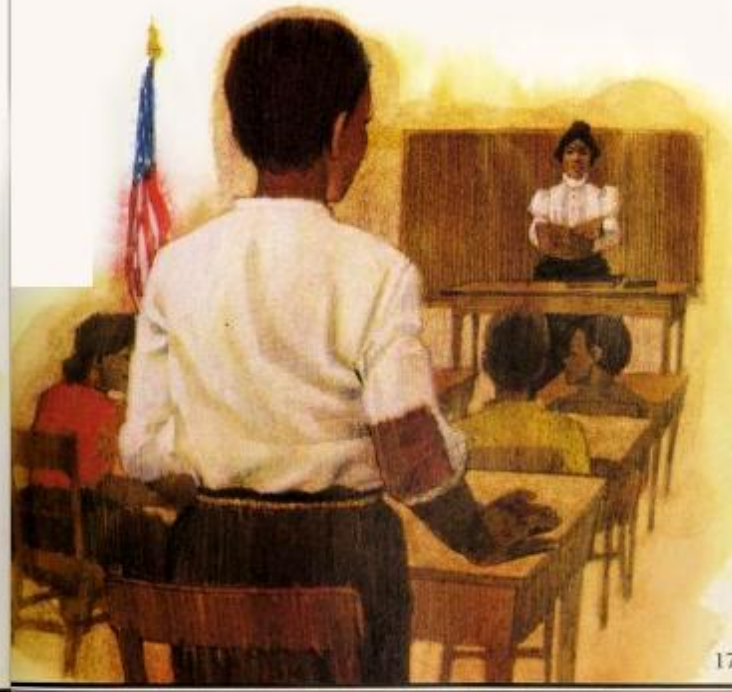
बुकर टी. वाशिंगटन की इच्छा अपने नाम को पूरा करने से कहीं ज्यादा था. वो लगातार स्कूल जाना चाहता था. पर तब तक उसके सौतेले पिता ने अपना मन बदल दिया था. अब वो चाहते थे कि बुकर फुल-टाइम काम करे. उसके बाद बुकर स्कूल छोड़कर एक कोयले की खदान में काम करने लगा.

कोयले की खदान अन्दर से अँधेरी और गन्दी थी और बहुत असुरक्षित थी. पर जब कभी भी बुकर को समय मिलता वो वहां अपनी इकलौती किताब को लेकर पढ़ता था. वो कोयले की खदान के लैंप की रोशनी में अपनी किताब पढ़ता था. रात के समय वो मीलों चलकर किसी टीचर के घर सीखने के लिए भी जाता था.

एक दिन खदान में बुकर ने किसी से हम्पटन इंस्टिट्यूट के बारे में सुना. वो अश्वेत लोगों के लिए एक ट्रेड-स्कूल था जहाँ काले लोग वो कुशलताएँ सीख सकते थे जो नौकरी मिलने के लिए आवश्यक थीं. उसके बाद बुकर ने उस स्कूल में जाने का अपना मन बनाया.

1871 में बुकर पंद्रह साल का हुआ. तब उसने मिसेज़ वाइला रुफ्फिन के लिए काम किया. वो खदान मालिक की पत्नी थीं. उन्हें खुश करना काफी कठिन था. पर उनके साथ काम करना खदान की मेहनत-मशक्कत से कहीं आसान था. बुकर उस काम को भी करके देखना चाहता था.
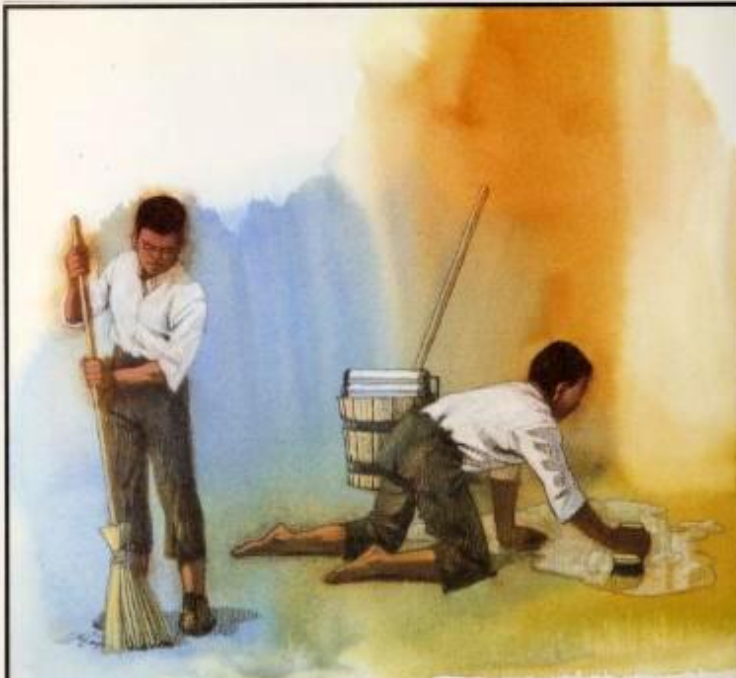
मिसेज़ रुफ्फिन ने बुकर से शेड की सफाई करने को कहा. बुकर ने वो काम तुरत शुरू किया. जल्द ही उसने वो काम ख़त्म भी कर दिया. मिसेज़ रुफ्फिन को उसका काम नापसंद आया और उन्होंने दुबारा फिर सफाई करने को कहा. बुकर ने कई बार उसी काम को दोहराया. फिर फर्श चमकने लगा और खिड़कियों के कांच के सब धब्बे मिट गए. शेड में सारे औज़ार करीने से सजे थे. उसके बाद ही मिसेज़ रुफ्फिन खुश हुईं.

बुकर ने मिसेज़ रुफ्फिन के साथ डेढ़ साल काम किया. वो उससे हर काम बहुत करीने से करवाती थीं. वो बुकर की पढ़ाई का भी ध्यान रखती थीं. काम ख़त्म करने के बाद वो बुकर को स्कूल जाने देती थीं.
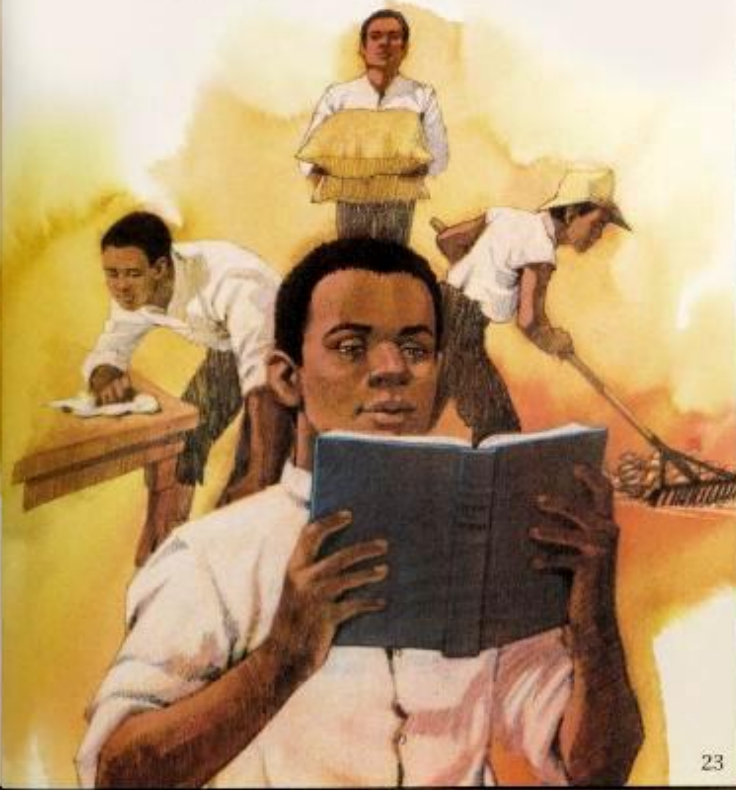
1872 में बुकर हम्पटन इंस्टिट्यूट में पढ़ने के लिए पूर्वी वर्जिनिया चला गया. उसके जाने का माँ को बहुत दुःख हुआ. पर माँ बहुत चाहती थीं कि उनका बेटा एक अच्छे स्कूल में पढ़े. बुकर ने कुछ पैसे भी बचाए थे. उसके पड़ोसियों ने भी उसे कुछ थोड़ा-बहुत दिया था. फिर भी स्कूल तक पहुँचने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे. स्कूल की फीस के लिए भी उसके पास पैसे नहीं थे.
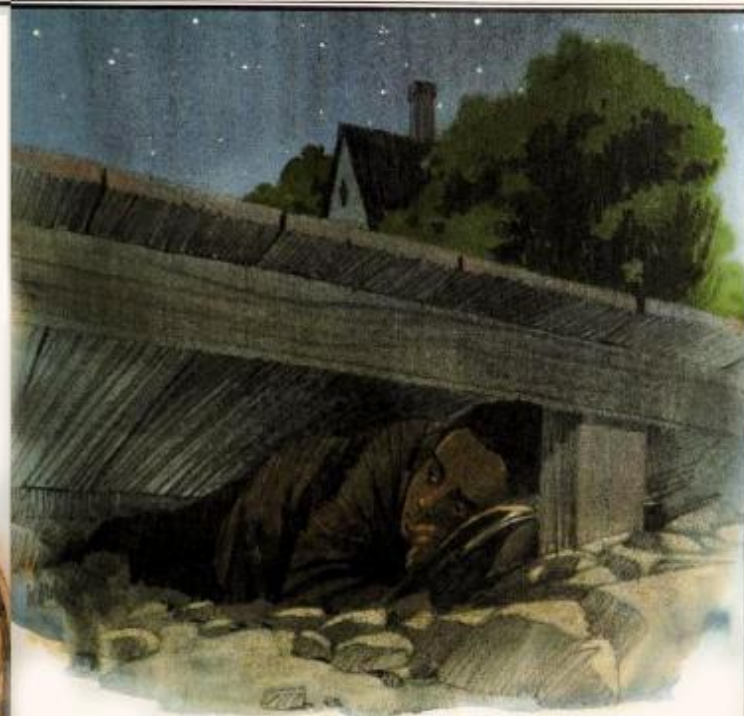
जब बुकर के पास घोड़ागाड़ी के लिए पैसे नहीं बचे तब वो पैदल चला. रिचमंड शहर में वो रात को सड़क के किनारे सोया. उसके पास खाने के लिए भी पैसे नहीं थे. अगले दिन सुबह उसे एक जहाज़ में माल लोड करने का काम मिला. उसने वहां काम किया और हम्पटन जाने के लिए पैसे बचाए.

बहुत से युवा लोग हम्पटन इंस्टिट्यूट जाना चाहते थे. वहां पर इतने लोगों को दाखिला नहीं मिल सकता था. वहां पर बुकर ने असिस्टेंट प्रिंसिपल मिस मेकी से मुलाक़ात की. पर मिस मेकी बुकर से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुईं. बुकर को वहां पढ़ने के लिए स्कूल की फीस देनी होगी – जिसके लिए उसे काम करना होगा. बुकर बहुत हारा-थका था. उसके कपड़े भी गंदे थे. पर बुकर में ज़रूर कुछ ख़ास बात थी. इसलिए शायद मिस मेकी ने उससे रुकने को कहा.

बुकर वहां घंटों इंतज़ार करता रहा. उसने कुछ छात्रों को स्कूल में दाखिल होते हुए भी देखा. कुछ लोगों को वापिस जाते हुए भी देखा. अंत में मिस मेकी ने उससे कहा, “लो यह झाड़ू लो और पास के कमरे की अच्छी तरह सफाई करो.”
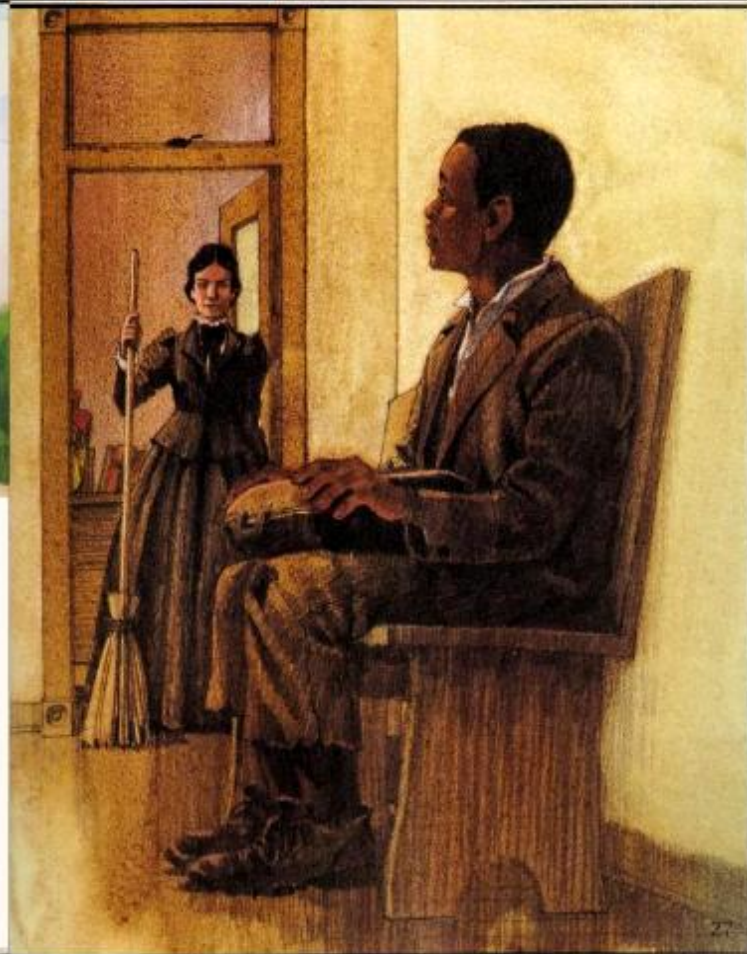
बुकर ने किताबों से काफी कुछ सीखा था. उसे किसी भी काम को करीने से करना भी आता था. उसने उस कमरे की तीन बार सफाई की. उसने उसे चार बार झाड़ा-पोछा. उसने सब फर्नीचर हटा कर उनके नीचे के फर्श की भी सफाई की. उसने कमरे का हरेक कोना साफ़ किया. काम ख़त्म करने के बाद वो मिस मेकी के पास गया.

मिस मेकी ने अपने रुमाल को मेज़ पर रगड़ा. उन्हें कुछ भी धूल नहीं दिखी. “चलो, अब तुम स्कूल में दाखिल हो सकते हो,” उन्होंने बुकर से कहा.

बुकर टी. वाशिंगटन ने हम्पटन इंस्टिट्यूट में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया. उसने वहां कई नयी कुशलताएँ सीखीं. बुकर ने वहां पर कृषि की पढ़ाई की और ईंटें बनाना सीखीं. उसने वहां पर भाषण देना भी सीखा. साथ में अंकगणित, विज्ञान और इतिहास के बारे में भी सीखा.

हम्पटन की पढ़ाई ख़त्म करने के बाद बुकर एक टीचर बना. दो साल बाद उसे स्कूल के प्रिंसिपल बनने का निमंत्रण मिला. वो एक नया स्कूल था. यह स्कूल टुस्केजी, अलाबामा में था.
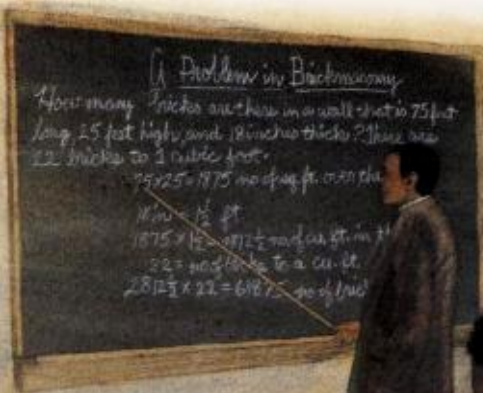
1881 में बुकर टुस्केजी आया. जब वो वहां पहुंचा तो न वहां स्कूल की कोई इमारत थी, न कोई टीचर न ही छात्र. वो खुद ही स्कूल था! पर वो उससे हताश नहीं हुआ.

वो आसपास के गांवों से छात्र ढूंढ कर लाया. शुरू में उसने एक पुराने चर्च में अपना स्कूल शुरू किया. बारिश के दिनों में चर्च की छत से बहुत पानी चूता था. अक्सर बच्चों को अपने सिरों के ऊपर छतरी रखनी पड़ती थी. पर बुकर पढ़ाई ज़ारी रखता था.

पुराना चर्च तो टुस्केजी इंस्टिट्यूट के बस एक शुरुआत थी. बुकर टी. वाशिंगटन ने अपने मन में एक बड़े स्कूल का सपना संजोया था.

बाद में टुस्केजी एक इतना बड़ा स्कूल बना जिसकी कभी बुकर ने भी कल्पना नहीं की थी. 1915 में टुस्केजी इंस्टिट्यूट में लगभग सौ इमारतें थीं और 1500 छात्र थे. वो वहां पर छात्र तमाम विषयों के साथ-साथ, 38 किस्म की कुशलताएँ भी सीख सकते थे.

टुस्केजी इंस्टिट्यूट में छात्रों ने बहुत कुछ काम की बातें सीखीं. वहां पर बुकर टी. वाशिंगटन ने अपने छात्रों को हमेशा बहुत लगन से पढ़ाया.

## महत्वपूर्ण तारीखें

| | |
|---|---|
| 1856 | वर्जिनिया, अमरीका में प्लांटेशन पर गुलाम के रूप में जन्म. |
| 1865 | गुलामी से मुक्ति. बुकर का परिवार वेस्ट वर्जिनिया गया. वहां उसने खदान के काम किया. |
| 1871 | मिसेज़ वाइला रुफ्फिन के साथ काम किया. वो खदान मालिक की पत्नी थीं. उन्होंने बुकर की पढ़ाई में मदद की और काम के बाद उसे स्कूल जाने दिया. |
| 1872-75 | वर्जिनिया की हम्पटन इंस्टिट्यूट में पढ़ाई की. |
| 1879 | हम्पटन इंस्टिट्यूट में टीचर बना. |
| 1881 | टुस्केजी इंस्टिट्यूट, अलाबामा का प्रमुख बने. |
| 1901 | आत्मकथा “अप फ्रॉम स्लेवरी” का प्रकाशन. |
| 1915 | में देहांत. तब वो टुस्केजी इंस्टिट्यूट के प्रेसिडेंट थे. |